वैरागी वैष्णव सम्प्रदाय : एक पर्यवेक्षण

डाo शशि कान्त राय

एसोसिएट प्रोफेसर

स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय

सेक्टर-११, चंडीगढ़ ǀ

वैरागी वैष्णव सम्प्रदाय के वर्णन से पूर्व उनके विषय में जानने की इच्छा और आवश्यकता हेतु उनका विवेचन इस प्रकार है-

सम्प्रदाय पद सम तथा प्र उपसर्गों, दा धातु और घञ प्रत्यय के संयोग से बना है ǀ जिसका अर्थ है- गुरु परम्परागत उपदेशǀ गुरु परम्परागत अवतीर्ण उपदेश ǀ गुरु परम्परागत समुपदिष्ट् व्यक्ति समूह इत्यादि ǀ

सम्प्रदाय शब्द के लिए अन्रेगी भाषा में “Sect” शब्द का प्रयोग हुआ हैǀ “Sect” के सम्बन्ध में कहा गया है- “Sect” is a small group of people who belong to a particular religion but who have some belief or practices as which separate them from the rest of the group. (oxford advanced learner dictionary, page 1381)

वैरागी पद के मूल में विराग शब्द है ǀ विराग पद की निष्पत्ति वि उपसर्ग- रंज धातु घञ प्रत्यय के संयोग से है ǀ विराग पद की व्युत्पत्ति है- विगत: राग: या विनष्ट: राग: ǀ इसका अर्थ है – सांसारिक वासनाओं और इच्छाओं के प्रति उदासीनता ǀ वैरागी पद के सम्बन्ध में कहा गया है - विरागस्य भावो तदस्यास्तीति इनि: विषयेच्छारहित्: वैराग्ययुक्त: यथा – स्नकाश्च्य सनन्दनश्च तृतीयश्च सनातनः सनत्कुमारो वैरागी चतुर्थ: पुत्र एव च ǀǀ

* इति ब्रहम वैवर्त पुराणे, ब्रह्म खण्ड २४, अध्याय

वैराग्य पद का अर्थ है विरागस्य भाव: ǀ विराग शब्द और षयञ प्रत्यय के सन्योग से वैराग्य पद की निष्पत्ति है ǀ इसका अर्थ है विषय तुच्ह्धी (शब्द कल्पद्रुम, चतुर्थ् काण्ड पृष्ठ ५१८ )

वैष्णव पद विष्णु शब्द और अण प्रत्यय के सन्योग से बना है जिसका अर्थ विष्णु मन्त्रोपासक, विष्णु भक्त है ǀ उसका लक्षण है गृहीत विष्णुदीक्षाक, विष्णुसेवापरायण मनुष्य है ǀ स्कन्दपुराण में वैष्णव के विषय में कहा गया है –

***“परमापदमापन्नो हर्षे वा समुपस्थिते ǀ***

***नैकादशी त्यजेदयस्तु यस्य दीक्षास्ति वैष्णवी ǀǀ***

***समात्मा सर्वजीवेषु निजाचार विप्लुत: ǀ***

***विष्णवर्पिताखिलाचार: स हि वैष्णव उच्यते ǀǀ***

***वेवेष्टि सर्वं संव्याप्य यस्तिष्ठति स वैष्णव उच्यते*** ǀ

(शब्द कल्पद्रुम, चतुर्थ् काण्ड पृष्ठ ५२४ )

भारतीय दार्शनिक एवं धार्मिक ग्रन्थों में परम शक्ति के साधन के रूप में वैराग्य को विशेष महत्व दिया गया है ǀ कामनाओं के कारण संसार में मनुष्य का आवागमन बना रहता है ǀ कामना के रहते हुए संसार गति अनिवार्य है ǀ मुडकोपनिषद में इसका उल्लेख किया गया है –

***कामान् य: कामयते मन्यमान्य: स कामभिर्जायते तत्र तत्र ǀ***

***पर्याप्त कामस्य कृतात्मस्विहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामा: ǀǀ***

***(मुण्डक० ३.२.२ )***

साधक वितृष्णा और वैराग्य से एक विलक्ष्ण अनुपम शान्ति का अनुभव करता है, जो भोग कामी को भोग द्वारा कभी प्राप्त नहीं होती ǀ कहा भी है –

***आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमाप: प्रविशन्ति यद्वत् ǀ***

***तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ǀǀ***

***विहाय कामान् य: सर्वान् पुमांश्चरति निष्पृह्:***

***निर्ममो निरहंकार: स शान्तिमधिगच्छति***

* ***गीता २/७०७१.***

महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में वैराग्य की प्राप्ति के लिए चित के निरोध का उपाय बताया है –

***भिक्षाशी जनमध्यसंगरहित: स्वायत्तचेष्ट: सदा***

***हानादानविरक्तमार्गनिरत: कश्चिन्तपस्वी स्थित: ǀ***

***रथ्याकीर्णविशीर्णजीर्णवसन: संप्राप्त कन्थासना***

***निर्मानो निरहंकृति: शमसुखा भोगै कबद्धस्पृह: ǀǀ***

* ***भर्तृहरि, वैराग्यशतक, शलोक ९५.***

***इन्द्रोऽपि न सुखी तादृग् यथा भिक्षुर्हि निस्पृहः ǀ***

***कोऽन्य: स्याद् इह संसारे त्रिलोकी विभवे सति ǀǀ***

***(महाभारत शान्तिपर्व, २.१७४.४६).***

महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन में वैराग्य की प्राप्ति के लिए चित के निरोध का उपाय बताया है ǀ ***‘योगस्चित्तवृत्तिनिरोधः’ तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम ǀ***

***(योग दर्शन १/ २,३)***

उन्होंने सभी विषयों से वितृष्ण होने और उन पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने को वैराग्य कहा है –

***दृष्टानुश्रविक विषय वितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम् ǀ***

***तत्परं पुरुष ख्यातेर्गुण वैतृष्ण्यं ǀ***

***(वही, /१५ - १६)***

श्री मद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है –

***असंशयं हि महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ǀ***

***अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ǀǀ***

***(गीता, ६. ३५)***

मन को जीतना वायु को जीतने के समान दुष्कर है ǀ वायु के समान बलिष्ठ, चंचल तथा प्रमथनशील मन को वश में करने का उपाय है - अभ्यास और वैराग्य ǀ इसका अभिप्राय यह है कि केवल हठ (अभ्यास) ही इस कार्य के लिए पर्याप्त नहीं है ǀ केवल हठ से तो मन के चंचलता रूपी वेगों में असहनीय वृद्धि हो जाती है ǀ अत: इसके लिए दोष निवारण विचार रूपी वैराग्य की भी आवश्यकता है ǀ सांख्य दर्शन के ***‘वैराग्याद्भ्यासाताच्च’*** का भी यही भाव है (सांख्यसूत्र ३. ३६)

ब्रहम विद्या की सफलता के लिये साधन चतुष्टय निम्न है

‘***ब्रह्मविद्या हेतौनित्यानित्यवस्तुविवेकवैराग्यशमादिषष्टक मोक्षेच्छा चतुष्टये च ǀ*** ***साधनायामपि उपासनाया निष्पाद्नाय ǀ’ (वाचस्पत्यं, खण्ड ६, पृष्ठ ५२७८)***

श्री भाष्यकार ने विवेक चूडामणि में वैराग्य साधनो की अनिवार्य आवश्यकता अन्वय - व्यतिरेक द्वारा बताया है

***साधनान्यत्र चत्वारि कथितानि मनीषिभि: ǀ***

***येषु सत्स्वेव सन्निष्ठा यदभावे न सिद्ध्यति ǀǀ (विवेक चूडामणि, १६ )***

इसी ग्रन्थ् में वे दूसरे स्थान पर वैराग्य का महत्व इस प्रकार वर्णन करते हैं -

***वैराग्यम् च मुमुक्ष्त्वं च तीव्रं यस्य तु विद्यते तस्मिन्नेवार्थवन्त: स्यु: फलवन्त: शमादय: ǀ***

***एतयोर्मन्दता यत्र विरक्तिर्मुमुक्षयो: सरौ सलिलवत्तत्र शमादेर्भासतामात्रं (वहि ३० – ३१)***

भारतीय संत परम्परा में मुख्यत: दो सम्प्रदायों का उल्लेख मिलता है - वैष्णव और शैव संप्रदाय ǀ वैरागी परम्परा वैष्णव और शैव दोनो में मिलती है ǀ यहाँ पर केवल वैष्णव सम्प्रदाय ही विवेच्य विषय है ǀ पद्म पुराण में कहा गया है कि कलयुग में चार सम्प्रदाय होंगे –

***‘ अत: कलौ भविष्यन्ति चत्वार: संप्रदायिन: ǀ***

***श्री माधविरुद्रसनका वैष्णवा: क्षितिपावना: ǀǀ (शब्द् कल्पद्रुम, पञ्चम काण्ड, पृष्ठ २८३)***

भगवान विष्णु और उनके सम्प्रदायों को मानने वाले वैरागी लोगो को वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी माना जाता है ǀ इसे भागवद सम्प्रदाय भी कहते हैं ǀ

वैष्णव सम्प्रदाय में मुख्यत: चार सम्प्रदायों का उल्लेख मिलता है –

1. आचार्य रामानुज एवं रामानन्द सम्प्रदाय
2. आचार्य निम्बार्काचार्य या नीमानंद सम्प्रदाय
3. मध्वाचार्य का सम्प्रदाय
4. बल्लभाचार्य या विष्णु स्वामी सम्प्रदाय ǀ

वैष्णव वैरागियों में प्रथम सम्प्रदाय में प्रमुख संत दक्षिण भारत के आचार्य रामानुज थे ǀ रामानुज का समय ११वीं - १२वीं शताब्दी माना जाता है ǀ वे कावेरी नदी के किनारे स्थित त्रिचिनोपल्ली नामक स्थान पर रहते थे ǀ रामानुज अपने प्रवचनों में लक्ष्मी और विष्णु की पूजा करने पर बल देते थे ǀ वे लक्ष्मी और विष्णु को उच्च आत्मा मानते थे ǀ दक्षिण भारत में उस समय प्रचलित लिंग या शिश्न पूजा के वे घोर विरोधी थे ǀ रामानुज अपने सम्प्रदाय में केवल उच्च कुलीन जातियों को ही प्रवेश देते थे ǀ इसलिए उन्हें वैरागियों के उदार वैष्णव सम्प्रदाय का संस्थापक कहना उचित प्रतीत नहीं होता ǀ

रामानुजीय परम्परा में उच्च पदस्थ लोगों को आचार्य कहा जाता है ǀ उन्हें वैष्णव पदानुक्रम में पुजारियों से श्रेष्ठ माना जाता है ǀ रामानुजीय सम्प्रदाय में भोजन की शुद्धता हेतु उनकी भोजन - व्यवस्था की विशेषता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वपाची होता है, अर्थात् अपना भोजन स्वयं बनाता है ǀ वे भोजन करते समय कपड़े नहीं पहनते हैं ǀ नहाने के बाद सिल्क या ऊनी वस्त्र पहनते हैं ǀ मैं आपका दास हूँ, यह रामानुजीय सम्प्रदाय में आपसी सम्बोधन होता है ǀ इस सम्प्रदाय के लोग अपने आचार्यों को साष्टांग प्रणाम करते हैं ǀ रामानुजीय त्रिदंडी तिलक लगाते हैं ǀ उनके तिलक की तीन रेखाओं में दो सफ़ेद रंग की लम्बवत रेखाएं और बीच में लाल या पीले रंग की रेखा होती है ǀ रामानुजीय राधा की पूजा को मान्यता नहीं देते ǀ

वैरागी वैष्णव सम्प्रदाय की रामानुजीय परम्परा में उत्तर भारत के प्रसिद्ध संत रामानंद का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है ǀ ‘शक्तिसंगमतंत्र’ में कहा गया है – ***तदानन्दी शान्तचित्ती प्रसन्नात्मा विचारधृक्***

***सर्वत्र समरूपश्च रामानन्दी प्रकीर्तितः***

***हविष्यांशं महेशानि यथावद वधारय***

***पाप संहरणाशक्तो विष्णुभक्तो जितेन्द्रिय:***

***यमादिनियमैर्युक्तो भक्ताचारपरायण:***

***स्वोपयोग फलग्राही परकार्यपरायण:***

***हविष्यांशी महेशानि शिवभक्तिस्वरुपधृक्***

***(शक्ति संगमतन्त्र खण्ड १, पटल – ८***

***उद्धृत शब्द् कलपद्रुम पचम काण्ड, पृष्ठ २८३)***

आचार्य रामानंद को उदारवादी और सुधारवादी संत के रूप में स्मरण किया जाता है ǀ उनका समय १४वीं शताब्दी (१२९९-१४१८ ईस्वी) माना जाता है ǀ वे उत्तर भारत के वाराणसी में रहते थे ǀ उन्होंने सम्प्रदाय में केवल उच्च जातियों को ही प्रवेश दिए जाने की परम्परा को समाप्त कर सभी जातियों के लिए प्रवेश खोलकर इसे सर्व सुलभ बना दिया ǀ उन्होंने अनंतानंद, भावानन्द, पीपा, सेन, धन्ना, नाभा दास, नरहर्यानन्द, सुखानंद, कबीर, रैदास, सुरसरी, पद्मावती जैसे बारह लोगों को अपना प्रमुख शिष्य बनाया जिन्हें द्वादश महाभागवत कहा जाता है ǀ इनमें कबीर और रैदास आगे चलकर निर्गुण उपासना का प्रचार प्रसार कर काफी यश अर्जित किये, सम्भवत: इसीलिए आचार्य रामानंद का उल्लेख ऐसे संत के रूप में किया जाता है जिनकी छत्र-छाया में सगुण और निर्गुण दोनों धाराओं के संत एवं उपासक विश्राम पाते हैं ǀ

जब समाज में चारों ओर आपसी द्वेष और वैमनस्य का वातावरण फैला हुआ था वैसे कठिन समय में आचार्य रामानंद ने आपसी प्रेम, विश्वास, सद्भाव भाईचारा, और सौमनस्य के सृजन हेतु नारा दिया –

***“ जांत- पांत पूछे नहि कोई हरि को भजे सो हरि का होई ”***

उनके द्वारा स्थापित रामानंद सम्प्रदाय या रामावत सम्प्रदाय आज वैष्णव सम्प्रदाय का सबसे बड़ा धार्मिक समूह है ǀ वैष्णवों के ५२ द्वारों में ३६ द्वारे केवल रामानंदियों के हैं ǀ इनके अपने अखाड़े भी हैं ǀ वैसे तो इस सम्प्रदाय की शाखाएँ और उपशाखाएँ पुरे भारत में फैली हैं, परन्तु मुख्य रूप से अयोध्या चित्रकूट, नासिक और हरिद्वार में इनके सैकड़ों मठ व मन्दिर हैं ǀ रामानंद सम्प्रदाय ‘रामायण’ को सबसे पवित्र ग्रन्थ मानते हैं ǀ अयोध्या तथा रामनाथं या रामेश्वरम की तीर्थ यात्रा करके अपने को धन्य मानते हैं ǀ रामानंदी तीन लम्बवत रेखाओं का तिलक लगाते हैं, जिसमें दो श्वेत रंग की और तीसरी लाला रंग की होती है जो मस्तक से नासिका तक जाती है ǀ रामानुजी तिलक में रेखा आखों की भौहों तक जाती है ǀ रामानंदी नासिका को सिंहासन का प्रतीक, दो श्वेत रेखाओं को राम लक्ष्मण का प्रतीक तथा बीच की लाल रंग की रेखा को सीता का प्रतीक मानते हैं ǀ

वैष्णव सम्प्रदाय में दूसरा सम्प्रदाय निम्बार्काचार्य या नीमानंद का है ǀ कहा गया है –

***निम्बार्काख्यं संप्रदायेन शृणु यत्नेन साम्प्रतम***

***नित्यार्चन क्रमासक्त: स्वतन्त्रैकपरायण:***

***बाह्यपूजादिनिरतो नान्य भक्त: प्रसन्नधी:***

***आर्य पक्षान्वित: स्वच्छः स्वच्छन्दाचार तत्पर:***

***स्वतन्त्र: स्मार्त्तविद्वेषी निम्बार्को भगवान्हरि:***

***(शक्ति संगमतन्त्र खण्ड १, पटल – ८***

***उद्धृत शब्द् कलपद्रुम पचम काण्ड, पृष्ठ २८३)***

वे मथुरा, वृन्दावन के आस-पास रहते थे ǀ नीमानंद या निम्बार्काचार्य का पूर्ववर्ती नाम भास्कराचार्य था ǀ भास्कराचार्य से उनका नाम नीमानन्द पड़ने के पीछे एक किंवदन्ती पाई जाती है , जिसके अनुसार एक धार्मिक शास्त्रार्थ के अवसर पर जब वह एक जैन संत से वाद-विवाद कर रहे थे, तब तक सूरज डूब गया ǀ तदनन्तर उन्होंने जैन संत को अल्पाहार का निवेदन किया ǀ परन्तु जैन परमपरा में रात्रि में भोजन निषिद्ध होने के कारण उस जैन संत ने भोजन लेने से अस्वीकार कर दिया ǀ ऐसी परिस्थिति में भास्कराचार्य ने सूर्य को अस्त होने से रोक दिया और उन्हें एक नीम के पेड़ पर तब तक प्रतीक्षा करने के लिया कहा जब तक भोजन पकाकर खा नहीं लिया जाता ǀ भास्कराचार्य की इस आज्ञा का पालन सूर्य ने भली भान्ति किया ǀ इस घटना के कारण भास्कराचार्य का नाम नीम के वृक्ष के नाम पर नीमानन्द या निम्बार्काचार्य पड गया ǀ

इस सम्प्रदाय के सिद्धांत उच्चादर्श और सच्चरित्र पर आधारित है ǀ कुछ विचारकों ने उनके विश्वास के द्वारा मुक्ति के विचार को बाइबिल से प्रभावित बताया है ǀ किन्तु यह विचार सत्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि भारतीय मानस श्रद्धा और विश्वास प्राय: जन्म से ही प्राप्त कर लेता है ǀ यह उसके संस्कार में समाविष्ट है ǀ उसे विश्वास के लिए बाइबिल की आवश्यकता ही नहीं है ǀ यह भी उल्लेखनीय है कि वैष्णव सम्प्रदाय का यह ऐसा प्रथम सम्प्रदाय है, जिसने कृष्ण के साथ राधा को पूजने का उपदेश किया और उन्हें दैवी रूप प्रदान किया ǀ नीमानंदी तिलक के रूप में मस्तक पर दो श्वेत रेखाएं और उसके केन्द्र में श्याम (काला) रंग का छोटा बिंदु लगाते हैं , जिसे श्याम बिन्दी कहा जाता हैं ǀ श्याम का अर्थ कृष्ण (काला ) रंग और उपास्य कृष्ण दोनों है ǀ

वैष्णव सम्प्रदाय में तीसरा स्थान मध्वाचार्य का है ǀ इस सम्प्रदाय का नाम दक्षिण भारतीय संत मध्वाचार्य के नाम पर रखा गया है ǀ उन्होंने शैव और वैष्णव दोनों सम्प्रदायों में व्याप्त वैमनस्य को दूर कर सामंजस्य और सौमनस्य स्थापित करने के लिए कृष्ण और शिव दोनों की पूजा करना प्रारम्भ किया ǀ

इस सम्प्रदाय का सिद्धांत यह है कि जीवात्मा और परमात्मा दोनों भिन्न-भिन्न है ǀ इसीलिए इनके सिद्धांत को द्वैतवाद कहा जाता है ǀ इस सम्प्रदाय का मानना है कि परमात्मा और ब्रह्माण्ड में अंतर है ǀ जीवात्मा और संसार में भी अंतर है ǀ वे निर्वाण या मोक्ष को स्वीकार नहीं करते हैं ǀ नीमनंदी सम्प्रदाय में प्रवेश हेतु अपने यज्ञोपवीत को नष्ट कर शैव सम्प्रदाय की तरह लाल रंग का वस्त्र धारण करते हैं ǀ मध्वाचार्य सम्प्रदाय के लोगों का तिलक तीन रेखाओं का होता है, जिसमें दो श्वेत लम्बवत रेखाएं मस्तक से लेकर नासिका तक होती हैं ǀ इन दोनों के बीच में तीसरी रेखा काले रंग की होती है ǀ

वैष्णव सम्प्रदाय में चतुर्थ सम्प्रदाय का नाम वल्लभाचार्य या विष्णु स्वामी सम्प्रदाय है ǀ वल्लभाचार्य का जन्म १४७९ ईस्वी में हुआ था ǀ ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण उनके समक्ष प्रकट हुए और उन्हें मथुरा के निकट मठ स्थापित करने का निर्देश दिया ǀ इस सम्प्रदाय के अनुयायी कृष्ण के ‘बाल-गोपाल’ रूप की पूजा करते हैं ǀ इस सम्प्रदाय के मठ-मन्दिर भारत में बहुत हैं, किन्तु मुख्य रूप से मथुरा और वृन्दावन में हैं, जो भगवान कृष्ण के बाल रूप की लीला भूमि रही है ǀ

वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरों में वाराणसी, जगन्नाथपुरी और द्वारका के मन्दिर विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं ǀ माना जाता है कि इस मन्दिर में कृष्ण की मूर्ति स्वयं मथुरा से चलकर आई, जब क्रूर आतताई औरंगजेब ने इस मन्दिर को ध्वस्त और नष्ट करने का आदेश दिया ǀ गोवर्घन पर्वत को अपनी ऊँगली पर उठाकर गोकुलवासियों को इन्द्र के कोप से उत्पन्न घनघोर वर्षा से बचाने में कृष्ण ने एक छोटे बालक के रूप में प्रतिनिधित्व किया ǀ

वल्लभाचार्य सम्प्रदाय में भगवान कृष्ण के विग्रह की वेशभूषा और अलंकरण विशेष रूप से दर्शनीय होते हैं ǀ सामान्यत: भगवान कृष्ण के विग्रह को ‘ठाकुर जी’ के नाम से जाना जाता है ǀ विग्रह पत्थर या पीतल का होता है ǀ सभी मंदिरों में प्रतिदिन आठों प्रहर सेवा होती है ǀ सभी अनुष्ठान पुजारियों द्वारा कराए जाते हैं, यजमान केवल दर्शक होता है ǀ पुजारियों को गोसाईं या महाराज कहा जाता है ǀ वल्लभाचार्य सम्प्रदाय में तिलक में मस्तक तक दो श्वेत रेखाओं तथा आधार पर अर्ध चक्कर और उन दोनों रेखाओं के बीच में श्वेत बिंदु होता है ǀ वल्लभाचार्य सम्प्रदाय में प्रवेश केवल उन्ही लोगों को दिया जाता है, जिनसे ब्राह्मण जाति जल ग्रहण कर सकती है ǀ

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैरागी वैष्णव सम्प्रदाय में चार सम्प्रदाय हुए हैं ǀ सभी सम्प्रदायों की अपनी एक विशिष्ट परम्परा है ǀ उनकी विशिष्ट परम्परा ही उनकी विशिष्ट पहचान बनी है ǀ अपने सम्प्रदाय को स्थापित करने में विशिष्ट योगदान करने के कारण सभी आचार्यों का गौरवपूर्ण महत्व है ǀ इन सभी आचार्यों के योगदान निश्चित रूप से प्रशंसनीय हैं ǀ इन सभी आचार्यों के प्रशंसनीय योगदान को स्वीकार करते हुए भी आचार्य रामानंद की समन्वयवादी दृष्टि का विशेष उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है ǀ

रामानंद का व्यक्तित्व भक्तियुगीन सम्प्रदायों के अनेक आचार्यों एवं साधकों से भिन्न संयोजित, संश्लिष्ट और सम्पूर्ण दिखाई देता है ǀ ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक दिशाओं से चलने वाली उस युग की सारी विरोधी रेखाएं उनके व्यक्तित्व के विराट बिन्दु पर मिलकर एकाकार हो गई हैं ǀ उनमें अतीतगर्भित साधनाएं नव चेतना को प्राप्त होकर भविष्य की ओर मुडती हैं ǀ उन्होंने रहस्यानुभव का वर्णन भी योग-शब्दावली में किया है, जिसकी परम्परा एक और औपनिषदिक परम्परा तथा दूसरी ओर सिद्ध और नाथ परम्परा से जोड़ी जा सकती है ǀ

इस प्रकार प्रकृत पत्र में वैरागी परम्परा में वैष्णव सम्प्रदायों का संक्षिप्त पर्यवेक्षण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया ǀ

-----------------------